IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 1, May 2023
Impact Factor: 7.301

vjfoUn dh /kkfeZdrk dk lkekftd iHkko

डॉ. रत्नेश पांडे

विभागाध्यक्ष एवम् पर्यवेक्षक

डॉ लाल जीत पचौरी

शोध निर्देशक

योगविभाग, रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, रायसेन म.प्र

नवीन

शोधार्थी, योगविभाग, रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, रायसेन म.प्र

vjfoUn dh /kkfeZdrk dk lkekftd iHkko %&

ऋर्षियों के संदेश को यद्यपि अभी मनुष्य नहीं समझ सका है किंतु इसमें निहित इस संदेश को उसने स्वीकार कर लिया। वस्तुतः ऋषि यहाँ तत्व द्रष्टा हैं उसे ही श्री अरविन्द ने धार्मिक मनुष्य कहा है जो मानव–जीवन को उसकी पूर्णता की और ले जाने में सक्षम है। धार्मिक मनुष्य जो मानव जीवन को उसकी पूर्णता की ओर ले जा सकता है। प्राचीन भारतीय विचार में ऋषि नाम दिया गया है। ऋषि वह है जिसने मानव जीवन को पूर्ण रूप से उपयोग किया है तथा अति बौद्धिक अति मानसिक और धार्मिक सत्य का श्रुति ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

भारतीय संस्कृति के उद्धारक अरविन्द का उद्देश्य किसी धर्म, आस्था या संघ को स्थापित करना नहीं अपितु आंतरिक उत्थान करना था, जिससे प्रत्येक मनुष्य सभी के अंदर के एक रूप को समझ सके और महान ज्ञान को प्राप्त कर सकें, ताकि मानव में ईश्वरीय गुणों की उत्पति हो। ऋषि अरविन्द महान हिन्दू संत, क्रांतिकारी, कवि, दार्शनिक, लेखक योगी और धार्मिक गुरू थे।